Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

Notes / GRB BOOKS

1 "वर्णाश्रम-धर्म" (Varnasrama-Dharma)

सामाजिक वर्ग विभेद के सभी भागों में किसी न किसी रूप में अवश्य पाये जाते हैं। वर्ण-व्यवस्था के निर्माण के संबन्ध में कुछ भी कहना सम्भव नहीं है।

वर्ण-व्यवस्था के निर्माण के लिए विद्वानों में मतान्तर है। कहीं पर वर्णों का निर्माण जन्म के आधार पर माना गया है तो कहीं पर धन के आधार पर और कहीं कर्म के आधार पर। पर इतना निश्चित है कि वर्णव्यवस्था प्रत्येक समाज में पाई जाती है।

'वर्ण' शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से हुई है जिसका अर्थ है वरण अथवा चुनाव करना। इसप्रकार व्यक्ति अपने कर्मों तथा स्वभाव के आधार पर जिसका चुनाव करता है वही वर्ण है। सर्वप्रथम वर्ण शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में काले और गोरे रंग की जनता के लिए किया गया है। प्रारम्भ में आर्य तथा दास इन दो वर्णों का ही उल्लेख मिलता है। धीरे-धीरे इसका प्रयोग गुण तथा कर्मों के आधार पर बने हुए चार वर्णों के लिए किया गया। वर्णों के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आते हैं।

समाज का वर्ण-व्यवस्था के रूप में विभाजन समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के श्रम विभाजन के सिद्धान्त पर आधारित है। जिसप्रकार से मानव शरीर के विभिन्न अंगों - सिर, हाथ, पैर, नाक, कान आदि में कार्य बंटे होते हैं इसी प्रकार से समाजरूपी शरीर के कार्यों का

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

भी उचित विभाजन होना आवश्यक है। समाज में कार्यों का विभाजन वर्ण-व्यवस्था के रूप में दिखलाई पड़ता है।

वर्ण की उत्पत्ति के बारे में एक मंत्र में कहा गया है कि "विराट सृष्टिकर्ता परम-परमेश्वर के ये चारों अंग हैं, ब्राह्मण मुख है, क्षत्रिय हाथ, वैश्य जंघाएँ और शूद्र पैर है। इनमें छोटा-बड़ा कोई नहीं है।

ब्राह्मण को मुख इसलिए कहा गया है कि वेद समाज में विद्या और ज्ञान की व्यवस्था करते हैं। क्षत्रिय को भुजा इसलिए कहा गया है कि क्षत्रिय शक्ति का प्रतीक है। क्षत्रिय समस्त समाज एवं राष्ट्र की रक्षा करते हैं। वैश्य को जंघाएँ इसलिए कहा गया है कि जिसप्रकार जंघाएँ शरीर को थामे रहता है उसीप्रकार वैश्य लोग सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था को ठीक करते हैं। शूद्र को पैर इसलिए कहा गया है कि जिसप्रकार पैर स्वयं कष्ट सहकर सारे शरीर का भार वहन कर व्यक्ति विशेष को आराम देता है। उसीप्रकार शूद्र समाज की हरतरह से सेवा करते हैं। पुराणों में भी लिखा गया है कि ये चारों वर्ण एक ही परमपिता परमेश्वर की संतानें हैं।

महात्मा गाँधी जी का कथन है कि वर्ण-व्यवस्था का अर्थ है-व्यक्ति के पेशों के चुनाव का पूर्व निर्धारण वर्ण नियम के अनुसार व्यक्ति जीविका

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

का पालन हेतु अपने पूर्वजों के पेशों को अपनाते हैं। क्योंकि साधारणतः अपने पिता के वर्णों को ही प्राप्त करता है। गांधी का विश्वास था कि विश्व के प्रत्येक मनुष्य कुछ स्वाभाविक और कुछ जन्मजात प्रवृत्तियों को लेकर जन्मते हैं और इसी को ध्यान में रखकर ही व्यक्ति के वर्णों का निर्धारण किया जाता था।

प्रारम्भ में वर्ण-व्यवस्था के गुणों का लाभ समाज को मिलता रहा लेकिन जब प्रत्येक वर्ण सैकड़ों-हजारों जातियों एवं उपजातियों में विभक्त हो गया तो कालान्तर में समाज को कुछ हानियाँ उठानी पड़ी। वर्ण-व्यवस्था के आधार पर समाज धीरे-धीरे अगणित जातियों में बँट गया, लोगों की सामाजिक भावना अत्यन्त संकुचित हो गई और राष्ट्र एकता के मार्ग में बाधाएं उपस्थित हुई। फलस्वरूप विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत को पददलित कर, यहाँ सैकड़ों वर्षों तक शासन किया। आज भी वर्ण के आधार पर विभिन्न जातियाँ एवं उपजातियाँ एक होकर विभक्त रूप प्रकट कर रही हैं। वे प्रजातंत्र के मार्ग में रोड़े अटकाने का काम कर रहे हैं। परन्तु मुख्यतः ये कोई प्रारम्भिक वर्ण-व्यवस्था के नहीं बल्कि कालान्तर में विकसित जाति-व्यवस्था के हैं। वर्ण-व्यवस्था ने तो वास्तव में समाज को अनेक संघर्षों से बचाया है।

आश्रम-व्यवस्था:

यह हिन्दू सामाजिक संगठन का एक मूलाधार रही है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

~~प्रस्तुत मुख्यतः के बीच पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष [illegible] में विभाजित जीवन - व्यवस्था की थी। वर्ण - व्यवस्था और मानव के समाज की अनेक संस्थाएँ की व्याख्या है।~~

'आश्रम' शब्द मूलरूप में संस्कृत के 'श्रम' धातु से बना है जिसका अर्थ है एक स्थान जहाँ प्रयत्न या उद्योग किया जाता है तथा इस प्रकार के प्रयत्न या उद्योग की क्रिया। इस प्रकार आश्रम को एक क्रिया स्थल माना गया है जहाँ पर ठहरकर व्यक्ति अपने को आगे की यात्रा के लिए तैयार करता है तथा उपयुक्त गुणों का विकास करता है। व्यक्तिगत जीवन - यात्रा की सम्पूर्ण अवधि को चार आश्रमों में विभाजित किया गया था।

1. ब्रह्मचर्य आश्रम :— यह विद्यार्थी रूप में जीवन व्यतीत करने का स्तर है। इस स्तर में विद्यार्थी स्थायी रूप से गुरु के घर पर ही निवास करता है। साधारणतः 12 वर्ष की आयु में उपनयन संस्कार के बाद बालक 'ब्रह्मचर्य' आश्रम में प्रवेश करता है। 'ब्रह्मचर्य' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'ब्रह्म' का अर्थ होता है 'महानता' और 'चर्य' का अर्थ है 'चलना' अथवा अनुसरण करना। इस प्रकार 'ब्रह्मचर्य' अथवा अनुसरण करना। इस प्रकार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes / 5.

'ब्रह्मचर्य' का अर्थ है महानता के मार्ग पर चलना। ब्रह्मचारी तप के माध्यम से अपनी जीवन की साधना करता था और अपने चरित्र का निर्माण कर भावी जीवन हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करता था।

धर्मशास्त्रों तथा मनुसंहिता में विद्यार्थी के दिनचर्या सम्बन्धी बहुत से नियम बताए गए हैं —

"काक चेष्टा बको ध्यानम् स्वान निद्रा तथैव च अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्।"

उसका यह कर्तव्य है कि वह प्रातःकाल सूर्योदय के पहले उठे, दिन में केवल दो बार भोजन करे, शहद, नमक, मीठा वस्तुएँ, मांस, गन्ध, जूता, छतरी आदि का प्रयोग न करे। उसके लिए नृत्य गायन, जुआ, झूठ, हिंसा आदि वर्जित हैं। ब्रह्मचारी के लिए विभिन्न कर्तव्यों का निर्धारण इसप्रकार किया गया है कि वह अपना शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सके।

ब्रह्मचर्य आश्रम में पठन-पाठन का कार्य समाप्त कर विद्यार्थी एक प्रतीकात्मक स्नान करता था तत्पश्चात वह स्नातक कहलाता था और गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी बनता था। प्रतीकात्मक स्नान के बाद गुरु को आशीर्वाद प्राप्तकर वह 'स्नातक' अपने घर लौटता था। इसे 'समावर्तन संस्कार' कहा जाता है।

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

2. गृहस्थाश्रम — ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् विवाह संस्कार सम्पन्न होने पर व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। विवाह धार्मिक तथा सामाजिक कर्तव्य पालन हेतु किया जाता था। विवाह का उद्देश्य धर्म, प्रजा तथा रति था। इस आश्रम में व्यक्ति मर्यादा युक्त धर्म, अर्थ तथा काम की प्राप्ति करता था। इसके माध्यम से वह स्वयं, परिवार तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करते हुए अगले आश्रमों के लिए तैयार करता था। गृह आश्रम कर्म का महान स्थल है जहाँ गृहस्थ ब्रह्मचर्य आश्रम में प्राप्त शिक्षाओं को मूर्तरूप देता है। इस आश्रम के अन्तर्गत एक गृहस्थ का धर्म है कि वह माता-पिता, आचार्यों एवं वृद्धों का आदर करे, पत्नी के प्रति उसका व्यवहार धर्म, अर्थ तथा काम की मर्यादाओं के अनुसार हो। इस प्रकार परिवार के सदस्यों में पारस्परिक आदर तथा एक दूसरे के कल्याण का सार ही कुल धर्म का सार है।

गृहस्थ धर्म पूर्ति के लिए प्रतिदिन पंचमहायज्ञ करता था। इन पंचमहायज्ञों के कारण वह ऋषियों, माता पिता बुजुर्गों, अतिथियों और समाज के अवधारियों के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करता था।

महाभारत

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

7

Notes /

GRB BOOKS

तथा अन्य ग्रन्थों में भी कहा जाता है कि गृहस्थाश्रम में जीवन व्यतीत किए बिना व्यक्ति को मोक्षप्राप्ति सम्भव नहीं है। "महाभारत में एक स्थान पर एक प्रकरण आता है जिसमें कहा जाता है कि एक महिला आजीवन अविवाहित रहकर कठोर तपस्या करती रही, क्योंकि उसे योग्य वर उपलब्ध नहीं हो सका था। उसका कठोर तप मोक्ष के लिए था। लेकिन नारदऋषि ने उससे कहा कि तेरी मोक्षप्राप्ति तबतक नहीं होगी जबतक कि वह विवाह संस्कार के द्वारा पवित्र नहीं हो जाती।"

अन्य सभी आश्रमों के लोग अपने भरण-पोषण के लिए गृहस्थ पर ही निर्भर करते हैं। यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण आश्रम है। क्योंकि इसकी सफलता पर ही जीवन की सफलता निर्भर है। इसप्रकार गृहस्थाश्रम सभी वर्गों का आधार है।

3. वानप्रस्थ आश्रम —

गृहस्थाश्रम के बाद व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करते हैं। इस अवस्था में बुढ़ापे का सारे गुण दीख पड़ते हैं। मनु ने इस सम्बन्ध में लिखा है —

"गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलितमात्मनः।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत्॥"

वानप्रस्थाश्रम के बाद व्यक्ति सन्यास आश्रम में प्रवेश करता है।

4. सन्यास आश्रम — आठ में वायु-पुराण में ...

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

संन्यासी के क्या कर्तव्य बताये गए हैं; भिक्षावृत्ति से भोजन करना चोरी न करना, बाह्य तथा आन्तरिक पवित्रता रखना, प्रमादी न होना ब्रह्मचर्य का पालन करना, क्योंकि प्राणियों के प्रति क्षमावान होना क्रोध न करना गुरु की सेवा करना तथा सत्य बोलना, ये परम कर्तव्य माने गए हैं। मनु ने संन्यासी के लिए लिखा है —

"दृष्टि पूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतं वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्॥"

इन चार आश्रमों को कठोरतापूर्वक पालन कर व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है।